

﴿ ۱۹ آياتها ﴾ ﴿ ۸۲ سُورَةُ الْاِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ ۸۲ ﴾ ﴿ ۱ مَرَكُوعًا ﴾

سूरए इन्फितार मक्किय्या है, इस में उन्नीस आयतें और एक रुकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

اِذَا السَّمَاءُ اَنْفَطَرَتْ ۱؎ وَاِذَا الْكُوَاكِبُ اُنْتَثَرَتْ ۲؎ وَاِذَا الْبِحَارُ

जब आस्मान फट पड़े और जब तारे झड़ पड़ें और जब समुन्दर बहा

فُجِرَتْ ۳؎ وَاِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۴؎ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَا

दिये जाएं² और जब कब्रें कुरेदी जाएं³ हर जान जान लेगी जो उस ने आगे भेजा⁴ और

اٰخَرَتْ ۵؎ يَا أَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِیْمِ ۶؎ الَّذِیْ

जो पीछे⁵ ऐ आदमी तुझे किस चीज ने फरेब दिया अपने करम वाले रब से⁶ जिस ने

خَلَقَكَ فَسُوِّكَ فَعَدَلَكَ ۷؎ فِیْ اٰیِّ صُوْرَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ۸؎ كَلَّا بَلْ

तुझे पैदा किया⁷ फिर ठीक बनाया⁸ फिर हमवार फरमाया⁹ जिस सूरत में चाहा तुझे तरकीब दिया¹⁰ कोई नहीं¹¹ बल्कि

تُكَدِّبُوْنَ بِالَّذِیْنَ ۹؎ وَاِنَّ عَلَیْكُمْ لَحٰفِظِیْنَ ۱۰؎ كَرٰمًا كَاتِبِیْنَ ۱۱؎

तुम इन्साफ होने को झुटलाते हो¹² और बेशक तुम पर कुछ निगहबान हैं¹³ मुअज़्ज़ज़ लिखने वाले¹⁴

یَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ۱۲؎ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِیْ نَعِیْمٍ ۱۳؎ وَاِنَّ الْفُجَّارَ

कि जानते हैं जो कुछ तुम करो¹⁵ बेशक नेकोकार¹⁶ जरूर चैन में हैं¹⁷ और बेशक बदकार¹⁸

لَفِیْ جَحِیْمٍ ۱۴؎ یَّصَلُوْنَهَا یَوْمَ الدِّیْنِ ۱۵؎ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغٰیِبِیْنَ ۱۶؎

जरूर दोज़ख में हैं इन्साफ के दिन उस में जाएंगे और उस से कहीं छुप न सकेंगे

1 : सूरए "इन्फितार" मक्की है, इस में एक रुकूअ, उन्नीस आयतें, अस्सी कलिमे, तीन सो सत्ताईस हर्फ हैं। 2 : और शीरी व शोर (मीठे और कड़वे) सब मिल कर एक हो जाएं। 3 : और उन के मुर्दे जिन्दा कर के निकाले जाएं। 4 : अमले नेक या बद 5 : छोड़ी, नेकी या बदी और एक कौल यह है कि जो आगे भेजा उस से सदकात मुराद हैं और जो पीछे छोड़ा उस से मीरास। 6 : कि तू ने बा वुजूद उस के ने'मतो करम के उस का हक न पहचाना और उस की ना फरमानी की 7 : और नेस्त से हस्त किया। 8 : सालिमुल आ'जा सुनता देखता 9 : आ'जा में मुनासबत रखी 10 : लम्बा या ठिंगना, खूब रू, या कम रू, गोरा या काला, मर्द या औरत 11 : तुम्हें अपने रब के करम पर मगरूर न होना चाहिये 12 : और रोजे जज़ा के मुन्किर हो 13 : तुम्हारे आ'माल व अक़वाल के और वोह फ़िरिश्ते हैं 14 : तुम्हारे अमलों के 15 : नेकी या बदी, उन से तुम्हारा कोई अमल छुपा नहीं। 16 : या'नी मोमिनीन सादिकुल ईमान 17 : जन्नत में 18 : काफ़िर।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٨﴾ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٨﴾

और तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन फिर तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन

يَوْمَ لَا تَمَلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ﴿١٩﴾

जिस दिन कोई जान किसी जान का कुछ इख़्तियार न रखेगी¹⁹ और सारा हुक्म उस दिन **अल्लाह** का है

﴿١٩﴾ ﴿٢٠﴾ ﴿٢١﴾ ﴿٢٢﴾ ﴿٢٣﴾ ﴿٢٤﴾ ﴿٢٥﴾ ﴿٢٦﴾ ﴿٢٧﴾ ﴿٢٨﴾ ﴿٢٩﴾ ﴿٣٠﴾ ﴿٣١﴾ ﴿٣٢﴾ ﴿٣٣﴾ ﴿٣٤﴾ ﴿٣٥﴾ ﴿٣٦﴾ ﴿٣٧﴾ ﴿٣٨﴾ ﴿٣٩﴾ ﴿٤٠﴾ ﴿٤١﴾ ﴿٤٢﴾ ﴿٤٣﴾ ﴿٤٤﴾ ﴿٤٥﴾ ﴿٤٦﴾ ﴿٤٧﴾ ﴿٤٨﴾ ﴿٤٩﴾ ﴿٥٠﴾ ﴿٥١﴾ ﴿٥٢﴾ ﴿٥٣﴾ ﴿٥٤﴾ ﴿٥٥﴾ ﴿٥٦﴾ ﴿٥٧﴾ ﴿٥٨﴾ ﴿٥٩﴾ ﴿٦०﴾ ﴿٦१﴾ ﴿٦२﴾ ﴿٦३﴾ ﴿٦४﴾ ﴿٦५﴾ ﴿٦६﴾ ﴿٦७﴾ ﴿٦८﴾ ﴿٦९﴾ ﴿٧०﴾ ﴿٧१﴾ ﴿٧२﴾ ﴿٧३﴾ ﴿٧४﴾ ﴿٧५﴾ ﴿٧६﴾ ﴿٧७﴾ ﴿٧८﴾ ﴿٧९﴾ ﴿٨०﴾ ﴿٨१﴾ ﴿٨२﴾ ﴿٨३﴾ ﴿٨४﴾ ﴿٨५﴾ ﴿٨६﴾ ﴿٨७﴾ ﴿٨८﴾ ﴿٨९﴾ ﴿٩०﴾ ﴿٩१﴾ ﴿٩२﴾ ﴿٩३﴾ ﴿٩४﴾ ﴿٩५﴾ ﴿٩६﴾ ﴿٩७﴾ ﴿٩८﴾ ﴿٩९﴾ ﴿१००﴾

सूरए मुतफ़िफ़ीन मक्किया है, इस में छतीस आयतें और एक रुकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

وَيْلٌ لِلْمُطَفِّفِينَ ﴿١﴾ الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ﴿٢﴾

कम तोलने वालों की खराबी है वोह कि जब औरों से माप (नाप कर) लें पूरा लें

وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وَزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ﴿٣﴾ أَلَا يَظُنُّ أُولَئِكَ أَنَّهُمْ

और जब उन्हें माप या तोल कर दें कम कर दें क्या उन लोगों को गुमान नहीं कि उन्हें

مَبْعُوثُونَ ﴿٤﴾ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥﴾ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦﴾

उठना है एक अज़मत वाले दिन के लिये² जिस दिन सब लोग³ रबूल आलमीन के हुज़ूर खड़े होंगे

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَارِ لَفِي سِجِّينٍ ﴿٧﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ﴿٨﴾

बेशक काफ़ि़रों की लिखत⁴ सब से नीची जगह सिज्जीन में है⁵ और तू क्या जाने सिज्जीन कैसी है⁶

كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ يَكْذِبُونَ

वोह लिखत एक मोहर किया नविशता (तहरीर नामा) है⁷ उस दिन⁸ झुटलाने वालों की खराबी है जो इन्साफ़ के

19 : या'नी कोई काफ़िर किसी काफ़िर को नपअ न पहुंचा सकेगा। (٤٨:١) 1 : "सूरए मुतफ़िफ़ीन" एक क़ौल में मक्किया है और एक में मदनिय्या और एक क़ौल यह है कि ज़मानए हिजरत में मक्कए मुकर्रमा व मदीनए तय्यिबा के दरमियान नाज़िल हुई, इस सूत में एक रुकूअ, छतीस आयतें, एक सो उन्हत्तर कलिमे और सात सो तीस हर्फ हैं। शाने नुज़ूल : रसूले करीम ﷺ जब मदीनए तय्यिबा तशरीफ़ फरमा हुए तो यहां के लोग पैमाने में ख़ियानत करते थे, बिल खुसूस एक शख्स अबू जुहैना ऐसा था कि वोह दो पैमाने रखता था लेने का और, देने का और। उन लोगों के हक़ में येह आयतें नाज़िल हुई और उन्हे पैमाने में अदल करने का हुक्म दिया गया। 2 : या'नी रोज़े क़ियामत, उस रोज़ ज़र्रे ज़र्रे का हिसाब किया जाएगा। 3 : अपनी क़ब्रों से उठ कर 4 : या'नी उन के आ'माल नामे। 5 : सिज्जीन सातवीं ज़मीन के अस्फल में एक मक़ाम है जो इब्लीस और उस के लश्करों का महल है। 6 : या'नी वोह निहायत ही होल व हैबत का मक़ाम है। 7 : जो न मिट सकता है न बदल सकता है। 8 : जब कि वोह नविशता (लिखा हुवा) निकाला जाएगा।